Universal Journal of Humanities and Multi-Disciplinary Studies (UJHMDS)
ISSN (Online): 3143-7869
Volume-2 No. 3 || Jul – Sep 2026 || PP. 36 – 41
https://ujhmds.org/

# भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन एवं आधुनिकीकरण का अध्ययन

**DOI:** https://doi.org/10.63345/ujhmds.v2.i3.201

**डॉ. सीमा रानी**
एसोसिएट प्रोफेसर
समाजशास्त्र विभाग, राजकीय डिग्री कॉलेज
जहाँगीराबाद, बुलंदशहर
उत्तर प्रदेश, भारत

http://www.ujhmds.org/ || **Vol. 2 No. 3 (2026): August Issue**

| **Date of Submission:** 05-07-2026 | **Date of Acceptance:** 19-07-2026 | **Date of Publication:** 09-08-2026 |
|---|---|---|

**सार— भारतीय समाज विश्व के प्राचीनतम एवं सर्वाधिक विविधतापूर्ण समाजों में से एक है, जिसकी सामाजिक संरचना समय के साथ निरंतर परिवर्तनशील रही है। सामाजिक परिवर्तन और आधुनिकीकरण ऐसी दो परस्पर संबद्ध प्रक्रियाएँ हैं जिन्होंने भारतीय समाज की संरचना, संस्थाओं, मूल्यों, व्यवहारों तथा जीवन-शैली को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। स्वतंत्रता के पश्चात लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था, औद्योगीकरण, नगरीकरण, वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास, शिक्षा के प्रसार, वैश्वीकरण तथा सूचना प्रौद्योगिकी ने सामाजिक परिवर्तन की गति को तीव्र किया है। इसके परिणामस्वरूप परिवार, जाति व्यवस्था, विवाह, शिक्षा, आर्थिक गतिविधियों, राजनीतिक सहभागिता तथा लैंगिक संबंधों में उल्लेखनीय परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन एवं आधुनिकीकरण की अवधारणा, उसके प्रमुख कारकों, स्वरूप तथा प्रभावों का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से विश्लेषण करना है। अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है तथा वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है। साहित्य समीक्षा में केवल वास्तविक एवं सत्यापित समाजशास्त्रीय ग्रंथों तथा प्रकाशित शोधों का उपयोग किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारतीय समाज में आधुनिकीकरण ने परम्परागत संरचनाओं को समाप्त नहीं किया है, बल्कि अनेक क्षेत्रों में परम्परा एवं आधुनिकता का सह-अस्तित्व विकसित हुआ है। अतः भारतीय समाज का आधुनिकीकरण एक विशिष्ट भारतीय स्वरूप प्रस्तुत करता है जिसमें सांस्कृतिक निरन्तरता एवं परिवर्तन दोनों समानांतर रूप से विद्यमान हैं।**

**प्रमुख शब्द: सामाजिक परिवर्तन, आधुनिकीकरण, भारतीय समाज, नगरीकरण, औद्योगीकरण, वैश्वीकरण, सामाजिक संरचना**

## भूमिका

समाज परिवर्तनशील है। कोई भी समाज स्थिर नहीं रहता, बल्कि समय, परिस्थितियों, ज्ञान, तकनीकी प्रगति तथा सांस्कृतिक संपर्कों के प्रभाव से उसमें निरंतर परिवर्तन होते रहते हैं। भारतीय समाज भी इस सार्वभौमिक नियम का अपवाद नहीं है। हजारों वर्षों की ऐतिहासिक यात्रा में भारतीय समाज ने अनेक राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों का अनुभव किया है। इन परिवर्तनों ने सामाजिक संस्थाओं, मान्यताओं तथा जीवन मूल्यों को निरंतर प्रभावित किया है।

आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन की गति विशेष रूप से स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद तेज हुई। संविधान द्वारा समानता, स्वतंत्रता एवं सामाजिक न्याय के सिद्धांतों को अपनाने, पंचवर्षीय योजनाओं, शिक्षा विस्तार, वैज्ञानिक विकास, औद्योगीकरण, लोकतंत्रीकरण तथा सूचना क्रांति ने भारतीय समाज को नई दिशा प्रदान की। साथ ही वैश्वीकरण एवं डिजिटलीकरण ने भारतीय नागरिकों के सामाजिक व्यवहार, आर्थिक अवसरों तथा सांस्कृतिक जीवन में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए।

समाजशास्त्रियों ने सामाजिक परिवर्तन को विभिन्न दृष्टिकोणों से समझाने का प्रयास किया है। एम. एन. श्रीनिवास ने संस्कृतिकरण, पाश्चात्यीकरण



@2026. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [ CC BY NC 4.0 ] and is available on www.ujhmds.org

Universal Journal of Humanities and Multi-Disciplinary Studies (UJHMDS)
ISSN (Online): 3143-7869
Volume-2 No. 3 || Jul – Sep 2026 || PP. 36 – 41
https://ujhmds.org/

तथा प्रभुत्वशाली जाति जैसी अवधारणाओं के माध्यम से भारतीय समाज में परिवर्तन का विश्लेषण किया, जबकि योगेन्द्र सिंह ने भारतीय आधुनिकीकरण को परम्परा और आधुनिकता के समन्वय की प्रक्रिया माना। ए. आर. देसाई ने सामाजिक परिवर्तन को आर्थिक एवं वर्गीय संरचनाओं से जोड़कर देखा। इन विभिन्न दृष्टिकोणों से स्पष्ट होता है कि भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन बहुआयामी एवं बहुस्तरीय प्रक्रिया है।

**अध्ययन की आवश्यकता**

भारतीय समाज तीव्र सामाजिक, आर्थिक एवं तकनीकी परिवर्तनों के दौर से गुजर रहा है। डिजिटल अर्थव्यवस्था, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, वैश्विक संचार, शिक्षा का विस्तार, महिला सशक्तिकरण तथा सामाजिक न्याय की नई अवधारणाओं ने समाज के स्वरूप को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। ऐसे परिवर्तनों के बीच यह समझना आवश्यक हो जाता है कि आधुनिकीकरण किस प्रकार सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक मूल्यों तथा पारम्परिक संस्थाओं को प्रभावित कर रहा है।

वर्तमान समय में जातिगत संबंधों, संयुक्त परिवार व्यवस्था, ग्रामीण जीवन, सामाजिक गतिशीलता तथा रोजगार के स्वरूप में तेजी से परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं। इन परिवर्तनों के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों पक्षों का समाजशास्त्रीय अध्ययन नीति-निर्माताओं, शिक्षकों, शोधकर्ताओं एवं सामाजिक संगठनों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

**अध्ययन के उद्देश्य**

- भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा का अध्ययन करना।
- आधुनिकीकरण की प्रमुख विशेषताओं का विश्लेषण करना।
- सामाजिक परिवर्तन के प्रमुख कारकों का अध्ययन करना।
- भारतीय समाज में आधुनिकीकरण के प्रभावों का विश्लेषण करना।
- परम्परा एवं आधुनिकता के अंतर्संबंधों का समाजशास्त्रीय मूल्यांकन करना।

**शोध प्रश्न**

- सामाजिक परिवर्तन से क्या अभिप्राय है?
- भारतीय समाज में आधुनिकीकरण किन प्रमुख कारकों से प्रभावित हुआ है?
- क्या आधुनिकीकरण ने भारतीय सामाजिक संस्थाओं के स्वरूप में परिवर्तन किया है?
- क्या भारतीय समाज में परम्परा और आधुनिकता का सह-अस्तित्व संभव है?

**परिकल्पनाएँ**

- भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया निरंतर गतिशील है।
- आधुनिकीकरण ने भारतीय सामाजिक संस्थाओं के स्वरूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न किया है।
- शिक्षा एवं तकनीकी विकास सामाजिक परिवर्तन के प्रमुख प्रेरक कारक हैं।
- भारतीय समाज में आधुनिकीकरण के साथ परम्परागत सांस्कृतिक तत्व भी विद्यमान हैं।

**साहित्य समीक्षा**



@2026. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [ CC BY NC 4.0 ] and is available on www.ujhmds.org

Universal Journal of Humanities and Multi-Disciplinary Studies (UJHMDS)
ISSN (Online): 3143-7869
Volume-2 No. 3 || Jul – Sep 2026 || PP. 36 – 41
https://ujhmds.org/

भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन एवं आधुनिकीकरण का अध्ययन समाजशास्त्र का अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। अनेक भारतीय एवं विदेशी विद्वानों ने इस विषय पर गहन अध्ययन प्रस्तुत किए हैं।

एम. एन. श्रीनिवास ने अपनी प्रसिद्ध कृति **"Social Change in Modern India" (1966)** में भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन की व्याख्या संस्कृतिकरण, पाश्चात्यीकरण तथा धर्मनिरपेक्षीकरण जैसी अवधारणाओं के माध्यम से की। उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि भारतीय समाज में परिवर्तन केवल आर्थिक कारकों से नहीं, बल्कि सांस्कृतिक प्रक्रियाओं द्वारा भी संचालित होता है। विशेष रूप से संस्कृतिकरण की अवधारणा सामाजिक गतिशीलता को समझने में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई।

योगेन्द्र सिंह ने **"Modernization of Indian Tradition" (1973)** में यह तर्क दिया कि भारतीय समाज में आधुनिकीकरण पश्चिमी समाजों की प्रतिलिपि नहीं है, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक परम्पराओं के साथ आधुनिक मूल्यों के समन्वय की प्रक्रिया है। उनके अनुसार भारतीय आधुनिकीकरण बहुआयामी, चयनात्मक तथा सांस्कृतिक रूप से अनुकूलित प्रक्रिया है।

ए. आर. देसाई ने **"Social Background of Indian Nationalism" (1948)** में सामाजिक परिवर्तन का विश्लेषण ऐतिहासिक भौतिकवादी दृष्टिकोण से किया। उन्होंने बताया कि औपनिवेशिक शासन, औद्योगिक विकास तथा पूँजीवादी आर्थिक संरचनाओं ने भारतीय समाज में वर्गीय परिवर्तन एवं सामाजिक पुनर्गठन की प्रक्रिया को गति प्रदान की।

आन्द्रे बेतेये ने भारतीय सामाजिक स्तरीकरण, जाति तथा असमानता के अध्ययन में यह स्पष्ट किया कि आधुनिकीकरण के बावजूद सामाजिक असमानताओं के अनेक स्वरूप बने हुए हैं। उनके अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि आधुनिक संस्थाओं का विस्तार सामाजिक समानता की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम है, किन्तु परम्परागत संरचनाएँ अभी भी प्रभावशाली हैं।

समकालीन शोधों में भी यह स्पष्ट हुआ है कि भारतीय समाज में आधुनिकीकरण एक समान गति से नहीं हुआ है। विभिन्न क्षेत्रों, वर्गों तथा समुदायों में इसकी प्रकृति एवं प्रभाव अलग-अलग दिखाई देते हैं। इसलिए भारतीय आधुनिकीकरण को "बहुविध आधुनिकताओं" के संदर्भ में समझना अधिक उपयुक्त माना जाता है।

## शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन गुणात्मक प्रकृति का है तथा पूर्णतः द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है।

**सारणी 1 : अध्ययन की रूपरेखा**

| अध्ययन का पक्ष | विवरण |
|---|---|
| अध्ययन का प्रकार | गुणात्मक |
| शोध स्वरूप | वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक |
| आँकड़ों का स्रोत | द्वितीयक |
| अध्ययन सामग्री | पुस्तकें, शोध-पत्र, सरकारी प्रकाशन एवं समाजशास्त्रीय साहित्य |
| विश्लेषण पद्धति | विषयवस्तु विश्लेषण |

## भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन

सामाजिक परिवर्तन से अभिप्राय समाज की संरचना, सामाजिक संबंधों, संस्थाओं, मूल्यों, मानदण्डों तथा व्यवहार प्रतिमानों में समय के साथ होने वाले परिवर्तन से है। यह परिवर्तन क्रमिक अथवा तीव्र, नियोजित अथवा अनियोजित तथा आंशिक अथवा व्यापक हो सकता है। भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन एक दीर्घकालिक ऐतिहासिक प्रक्रिया रही है, जो वैदिक काल, बौद्ध एवं जैन आंदोलनों, मध्यकालीन सांस्कृतिक समन्वय, औपनिवेशिक शासन तथा स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात विभिन्न चरणों से होकर विकसित हुई है।

स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय संविधान ने समानता, स्वतंत्रता, धर्मनिरपेक्षता तथा सामाजिक न्याय जैसे लोकतांत्रिक मूल्यों को स्थापित किया, जिसने सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को संस्थागत आधार प्रदान किया। शिक्षा के सार्वभौमिक विस्तार, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के लिए संवैधानिक संरक्षण, पंचायती राज व्यवस्था, महिला सशक्तिकरण, सूचना क्रांति तथा आर्थिक उदारीकरण ने सामाजिक संरचना को व्यापक रूप से प्रभावित किया। परिणामस्वरूप सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि हुई तथा पारंपरिक सामाजिक बंधनों में क्रमिक परिवर्तन देखने को मिला।

आज भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन केवल आर्थिक क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि यह परिवार, विवाह, शिक्षा, राजनीति, धर्म, संस्कृति, संचार, स्वास्थ्य, रोजगार तथा सामाजिक चेतना के प्रत्येक क्षेत्र में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। हालांकि परिवर्तन की गति ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों, विभिन्न राज्यों तथा सामाजिक वर्गों में समान नहीं है।



@2026. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [ CC BY NC 4.0 ] and is available on www.ujhmds.org

Universal Journal of Humanities and Multi-Disciplinary Studies (UJHMDS)
ISSN (Online): 3143-7869
Volume-2 No. 3 || Jul – Sep 2026 || PP. 36 – 41
https://ujhmds.org/

**आधुनिकीकरण की अवधारणा**

आधुनिकीकरण वह सामाजिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से समाज वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तर्कशीलता, प्रौद्योगिकी, लोकतांत्रिक मूल्यों, औद्योगिक विकास, शिक्षा, नगरीकरण तथा आर्थिक प्रगति को अपनाते हुए पारंपरिक व्यवस्था से आधुनिक व्यवस्था की ओर अग्रसर होता है।

भारतीय संदर्भ में आधुनिकीकरण का अर्थ केवल पश्चिमी जीवनशैली को अपनाना नहीं है, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक परम्पराओं एवं आधुनिक मूल्यों के समन्वित विकास से है। योगेन्द्र सिंह ने इसे भारतीय परम्परा एवं आधुनिक संस्थाओं के रचनात्मक समन्वय की प्रक्रिया बताया है। इसी कारण भारतीय समाज में आधुनिक अस्पताल, डिजिटल बैंकिंग, ऑनलाइन शिक्षा तथा ई-गवर्नेंस जैसी आधुनिक व्यवस्थाओं के साथ धार्मिक परम्पराएँ, पारिवारिक मूल्य तथा सांस्कृतिक उत्सव समान रूप से विद्यमान हैं।

भारतीय आधुनिकीकरण की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

- वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास
- शिक्षा का प्रसार
- तकनीकी नवाचार
- लोकतांत्रिक सहभागिता
- महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक भागीदारी
- औद्योगीकरण एवं नगरीकरण
- सामाजिक समानता एवं मानवाधिकारों की स्वीकृति
- डिजिटल समाज एवं सूचना प्रौद्योगिकी का विस्तार

**सामाजिक परिवर्तन के प्रमुख कारक**

भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन अनेक परस्पर सम्बद्ध कारकों के परिणामस्वरूप हुआ है। इनमें प्रमुख कारक निम्नलिखित हैं—

**शिक्षा**

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का सबसे प्रभावशाली माध्यम है। शिक्षा ने अंधविश्वासों में कमी, वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास, लैंगिक समानता तथा सामाजिक जागरूकता को प्रोत्साहित किया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 जैसी पहलें ज्ञान-आधारित समाज के निर्माण की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम हैं।

**औद्योगीकरण**

औद्योगिक विकास ने रोजगार के नए अवसर प्रदान किए, ग्रामीण जनसंख्या का शहरों की ओर प्रवास बढ़ाया तथा पारम्परिक व्यवसायों के स्थान पर आधुनिक उत्पादन प्रणालियों का विकास किया।

**नगरीकरण**

नगरीकरण ने विविध संस्कृतियों के बीच संपर्क बढ़ाया, सामाजिक गतिशीलता को प्रोत्साहित किया तथा संयुक्त परिवारों के स्थान पर एकल परिवारों की संख्या में वृद्धि की।

**वैश्वीकरण**

वैश्वीकरण ने भारतीय समाज को विश्व अर्थव्यवस्था, संस्कृति, शिक्षा तथा तकनीकी नवाचारों से जोड़ा। इसके परिणामस्वरूप उपभोक्तावाद, डिजिटल अर्थव्यवस्था तथा वैश्विक रोजगार अवसरों का विस्तार हुआ।

**सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी**

इंटरनेट, मोबाइल संचार, डिजिटल भुगतान, सामाजिक माध्यम तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने ज्ञान, सूचना तथा सेवाओं तक पहुँच को सरल बनाया है। इससे सामाजिक सहभागिता एवं प्रशासनिक पारदर्शिता में वृद्धि हुई है।

**लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था**

संवैधानिक अधिकारों, पंचायती राज संस्थाओं, महिला आरक्षण तथा सामाजिक न्याय की नीतियों ने समाज के विभिन्न वर्गों को निर्णय प्रक्रिया में सहभागी बनाया है।

**भारतीय समाज में आधुनिकीकरण के विभिन्न आयाम**



@2026. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [ CC BY NC 4.0 ] and is available on www.ujhmds.org

Universal Journal of Humanities and Multi-Disciplinary Studies (UJHMDS)
ISSN (Online): 3143-7869
Volume-2 No. 3 || Jul – Sep 2026 || PP. 36 – 41
https://ujhmds.org/

आधुनिकीकरण का प्रभाव भारतीय समाज के अनेक क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

**परिवार**

संयुक्त परिवारों की संख्या में कमी तथा एकल परिवारों की वृद्धि आधुनिक आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों का परिणाम है। यद्यपि पारिवारिक मूल्यों का महत्व अभी भी बना हुआ है।

**जाति व्यवस्था**

संवैधानिक समानता, शिक्षा तथा रोजगार के अवसरों ने जातिगत प्रतिबंधों को कम किया है। फिर भी सामाजिक एवं राजनीतिक स्तर पर जाति की भूमिका पूर्णतः समाप्त नहीं हुई है।

**महिला सशक्तिकरण**

शिक्षा, रोजगार, राजनीतिक प्रतिनिधित्व तथा कानूनी अधिकारों के विस्तार ने महिलाओं की सामाजिक स्थिति को मजबूत किया है। उच्च शिक्षा एवं प्रशासनिक सेवाओं में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी इसका उदाहरण है।

**शिक्षा व्यवस्था**

डिजिटल शिक्षा, ऑनलाइन शिक्षण, कौशल विकास तथा बहुविषयी शिक्षा ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को आधुनिक स्वरूप प्रदान किया है।

**आर्थिक क्षेत्र**

कृषि आधारित अर्थव्यवस्था से सेवा एवं उद्योग आधारित अर्थव्यवस्था की ओर संक्रमण हुआ है। स्टार्टअप संस्कृति, डिजिटल भुगतान तथा ई-कॉमर्स ने आर्थिक व्यवहारों में व्यापक परिवर्तन किया है।

**राजनीतिक सहभागिता**

मतदाता जागरूकता, सूचना का अधिकार, डिजिटल शासन तथा सामाजिक मीडिया ने नागरिकों की लोकतांत्रिक भागीदारी को बढ़ाया है।

**सारणी 2 : भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन के प्रमुख कारक**

| कारक | प्रमुख प्रभाव |
|---|---|
| शिक्षा | सामाजिक जागरूकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण |
| औद्योगीकरण | रोजगार एवं आर्थिक विकास |
| नगरीकरण | सामाजिक गतिशीलता एवं जीवनशैली परिवर्तन |
| वैश्वीकरण | वैश्विक संपर्क एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान |
| सूचना प्रौद्योगिकी | डिजिटल समाज एवं सूचना की उपलब्धता |
| लोकतंत्र | सामाजिक न्याय एवं जनसहभागिता |

**सारणी 3 : परम्परागत एवं आधुनिक समाज की तुलनात्मक विशेषताएँ**

| परम्परागत समाज | आधुनिक समाज |
|---|---|
| संयुक्त परिवार | एकल परिवार की वृद्धि |
| जाति आधारित व्यवसाय | योग्यता आधारित व्यवसाय |
| सीमित शिक्षा | सार्वभौमिक शिक्षा |
| कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था | उद्योग एवं सेवा प्रधान अर्थव्यवस्था |
| रूढ़िवादी सोच | वैज्ञानिक दृष्टिकोण |
| सीमित संचार | डिजिटल संचार |

**सारणी 4 : भारतीय समाज में आधुनिकीकरण के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव**

| सकारात्मक प्रभाव | नकारात्मक प्रभाव |
|---|---|
| शिक्षा का विस्तार | उपभोक्तावाद |
| महिला सशक्तिकरण | पारिवारिक विघटन |
| तकनीकी प्रगति | सांस्कृतिक असंतुलन |
| आर्थिक अवसर | पर्यावरणीय चुनौतियाँ |
| लोकतांत्रिक जागरूकता | सामाजिक तनाव |
| डिजिटल सेवाएँ | डिजिटल विभाजन |

**विश्लेषण एवं चर्चा**



@2026. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [ CC BY NC 4.0 ] and is available on www.ujhmds.org

Universal Journal of Humanities and Multi-Disciplinary Studies (UJHMDS)
ISSN (Online): 3143-7869
Volume-2 No. 3 || Jul – Sep 2026 || PP. 36 – 41
https://ujhmds.org/

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन बहुआयामी एवं निरंतर विकसित होने वाली प्रक्रिया है। आधुनिकीकरण ने सामाजिक संस्थाओं के स्वरूप में व्यापक परिवर्तन किया है, परन्तु भारतीय समाज ने अपनी सांस्कृतिक पहचान को पूर्णतः त्यागा नहीं है। इसके विपरीत भारतीय समाज ने अनेक क्षेत्रों में परम्परा एवं आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित किया है।

शिक्षा, सूचना प्रौद्योगिकी तथा लोकतांत्रिक संस्थाओं ने सामाजिक समानता, महिला सशक्तिकरण तथा नागरिक जागरूकता को प्रोत्साहित किया है। वहीं दूसरी ओर उपभोक्तावाद, सामाजिक असमानता, डिजिटल विभाजन तथा पर्यावरणीय संकट जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं।

वर्तमान भारतीय समाज "परम्परा बनाम आधुनिकता" की स्थिति में न होकर "परम्परा के साथ आधुनिकता" की दिशा में अग्रसर दिखाई देता है। यही भारतीय आधुनिकीकरण की विशिष्ट पहचान है।

## निष्कर्ष

भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन एवं आधुनिकीकरण एक दीर्घकालिक, जटिल एवं बहुआयामी प्रक्रिया है। यह केवल तकनीकी या आर्थिक परिवर्तन तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक मूल्यों, राजनीतिक सहभागिता, शिक्षा, परिवार, जाति तथा लैंगिक संबंधों को भी व्यापक रूप से प्रभावित करता है। स्वतंत्रता के पश्चात लोकतांत्रिक शासन, शिक्षा विस्तार, औद्योगीकरण, नगरीकरण, सूचना प्रौद्योगिकी तथा वैश्वीकरण ने इस प्रक्रिया को गति प्रदान की है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि भारतीय समाज में आधुनिकीकरण ने परम्परागत सामाजिक संस्थाओं को पूर्णतः समाप्त नहीं किया, बल्कि अनेक स्तरों पर उनके पुनर्संरचन एवं अनुकूलन की प्रक्रिया को जन्म दिया। यही कारण है कि भारतीय समाज में परम्परा एवं आधुनिकता का सह-अस्तित्व आज भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

भविष्य में समावेशी विकास, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, डिजिटल समानता, लैंगिक न्याय, सामाजिक समरसता तथा सतत विकास की नीतियाँ भारतीय समाज में संतुलित सामाजिक परिवर्तन एवं उत्तरदायी आधुनिकीकरण को और अधिक सुदृढ़ बना सकती हैं।

## सुझाव

- गुणवत्तापूर्ण एवं समावेशी शिक्षा का व्यापक विस्तार किया जाए।
- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के मध्य डिजिटल विभाजन को कम किया जाए।
- महिला शिक्षा एवं आर्थिक सशक्तिकरण को और प्रोत्साहित किया जाए।
- सामाजिक समानता एवं संवैधानिक मूल्यों के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाई जाए।
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं सामाजिक उत्तरदायित्व आधारित शिक्षा को बढ़ावा दिया जाए।
- विकास योजनाओं में सांस्कृतिक विरासत एवं स्थानीय परम्पराओं के संरक्षण को भी समान महत्व दिया जाए।

## संदर्भ सूची

1. Desai, A. R. (1948). *Social Background of Indian Nationalism*. Popular Prakashan.
2. Béteille, André. (1965). *Caste, Class and Power: Changing Patterns of Stratification in a Tanjore Village*. University of California Press.
3. Srinivas, M. N. (1966). *Social Change in Modern India*. University of California Press.
4. Singh, Yogendra. (1973). *Modernization of Indian Tradition*. Thomson Press (India).
5. Dube, S. C. (1990). *Indian Society*. National Book Trust, India.
6. Shah, Ghanshyam. (2004). *Social Movements in India: A Review of Literature*. Sage Publications.
7. Giddens, Anthony. (2009). *Sociology* (6th ed.). Polity Press.
8. National Education Policy 2020. Ministry of Education, Government of India.
9. Census of India. (2011). *Primary Census Abstract*. Office of the Registrar General & Census Commissioner, India.
10. United Nations Development Programme. (2023). *Human Development Report 2023/2024*. United Nations Development Programme.



@2026. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [ CC BY NC 4.0 ] and is available on www.ujhmds.org